Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part – II (Hons)
Paper – IV
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(Western Philosophy)

Notes (ह्यूम : संस्कार (प्रत्यक्ष) एवं प्रत्यय)

GRB BOOKS

लॉक और बर्कले ने ज्ञान मीमांसा को समझने के लिए मनोवैज्ञानिक विधि की मदद ली। ह्यूम ने भी इसी परंपरा को अपनाते हुए यथा संभव लॉक तथा बर्कले के विचारों को सरल एवं संगत बनाने का प्रयास किया। ह्यूम के अनुसार सम्पूर्ण ज्ञान केवल दो ही विषयों पर आश्रित है — प्रत्यक्ष या संस्कार एवं प्रत्यय। प्रत्यक्ष से तात्पर्य है प्रत्यय की प्रतिमा या उसकी नकल। संवेदनाओं को ह्यूम ने मुख्य माना है। आत्मचिंतन संवेदनाओं की नकल नहीं है। पर संवेदनाओं की तुलना में उसे गौण कहा जायेगा।

प्रत्यक्ष मूल है और प्रत्यय को उसकी नकल बताया गया है। बिना अनुरूप प्रत्यक्ष के प्रत्यय संभव नहीं हो सकते। अतः प्रत्यक्ष पहले होता है, तब उसका प्रत्यय हो सकता है। जहाँ भी सरल प्रत्यय होगा उसके अनुरूप प्रत्यक्ष अवश्य होगा। किंतु मिश्रित प्रत्यय के लिए जरूरी नहीं है कि वह प्रत्यक्षों की नकल हो। हम सरल प्रत्ययों को जोड़कर मिश्रित प्रत्यय बना सकते हैं। प्रत्यक्ष प्रत्ययों की अपेक्षा अधिक सतेज, सजीव व प्रबल होते हैं और उनकी अपेक्षा प्रत्यय क्षीण कमजोर होते हैं।

लॉक ने जड़ पदार्थों को ही संवेदनाओं का उत्पादक कारण माना है। बर्कले ने

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

जड़ पदार्थों को ही संवेदनाओं का उत्पादक कारण माना है। बर्कले ने जड़ पदार्थों को अस्वीकार करके प्रत्ययों या संवेदनाओं को मानसिक माना है। ह्यूम के अनुसार संवेदनाएँ न तो भौतिक ही समझी जा सकती हैं और न मानसिक ही।

ह्यूम का प्रसिद्ध सिद्धान्त है कि जहाँ भेद किया जा सकता है, वहाँ पृथकता भी अवश्य होती है। इस सिद्धान्त के अनुसार सभी प्रत्यक्ष एक दूसरे से अलग और पृथक सरल रूप में पाये जाते हैं। चूँकि सरल अवयव की अपनी स्वतंत्र सत्ता है और अणुओं को सरल, शाश्वत, द्रव्य माना जाता है, इसलिए ह्यूम के संवेदनावाद को संवेदन अणुवाद भी कहा जाता है। चूँकि प्रत्यक्ष निरवयव सरल बीजवत् हैं इसलिए किन्हीं भी दो सरल प्रत्यक्षों में आंतरिक अथवा अनिवार्य संबंध नहीं हो सकता है। परंतु बिना प्रत्ययों तथा प्रत्यक्षों के बीच संबंध स्थापित किए ज्ञान संभव नहीं है। इसलिए ह्यूम ने माना है कि प्रत्यक्षों तथा प्रत्ययों के बीच आंतरिक संबंध न होकर बाहरी संबंध संभव है। इस प्रकार के संबंध को ह्यूम ने साहचर्य - संबंध कहा है। अत: आगे चलकर हम देखेंगे कि ह्यूम के अनुसार प्रत्ययों में तार्किक या आंतरिक संबंध न होकर

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes

GRB BOOKS

केवल बाहरी संबंध पाया जाता है। यह बाहरी साहचर्य संबंध हमारी आदत और कल्पना पर निर्भर करता है। परंतु जब तक हम प्रत्ययों के बीच आंतरिक संबंध न मानें तब तक किसी भी ज्ञान को जो इनके संबंध पर आधारित रहता है, अनिवार्य तथा असंदिग्ध नहीं कहा जाता है। यही कारण है कि ज्ञान को बाहरी संबंध पर आधारित मान लेने पर ह्यूम के विचार में संशयवाद आ जाता है।

ह्यूम के अनुसार ज्ञान की इमारत प्रत्यक्ष और उसके अनुरूप प्रत्यय पर खड़ी हुई है। हम अपनी कल्पना को कितने भी ऊँचे क्यों न दौड़ा दें, परन्तु इनकी राशि इन प्रत्यक्ष और प्रत्यय की सीमा से बाहर नहीं जा सकते हैं। परंतु हम देखते हैं कि मन अपनी रचनात्मक प्रक्रिया से नवीन प्रत्ययों का निर्माण करता है। यह ठीक है कि वर्तमान कालीन मनोविज्ञान में गेस्टाल्टवादियों ने ह्यूम के अनुभववाद का मुँह तोड़ जवाब दिया है। यदि हम गेस्टाल्टवादियों की बात छोड़ दें तब भी ह्यूम की रचना से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्ययों के निर्माण में मन नवीन रचना कर सकता है, जिसे हम प्रत्ययों की नकल नहीं कह सकते।"

ह्यूम ने बहुत ही सावधानी से यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

कोई भी सरल प्रत्यय बिना उसके अनुरूप प्रत्यक्ष के सम्भव नहीं है। परन्तु इस अपवाद रहित सिद्धान्त में उन्होंने स्वयं एक अपवाद की संभावना देखी है। यदि नीले रंग की कुछ मात्राएँ या उसके अपरंग हों और किसी को एक अपरंग को छोड़कर अन्य सभी अपरंगों को दिखाया जाय तो उस अपरंग का भी प्रत्यय सम्भव हो सकता है जिसे उसने नहीं देखा है। अतः यहाँ बिना प्रत्यक्ष के भी प्रत्यय संभव हो सकता है। इस प्रकार अवसर पड़ने पर मन के आधार पर नवीन प्रत्यय की रचना की जा सकती है जिसे प्रत्यक्ष से प्राप्त नहीं किया गया है। फिर यदि हमें किसी रंग-विशेष का प्रत्यय हो तो उससे क्या किसी एक ही विशेष अपरंग का बोध होता है या उस रंग के अनेक अपरंगों का बोध होता है? लॉक के अनुसार किसी एक रंग-विशेष का प्रत्यय अनेक रंगों और अपरंगों का प्रतिनिधित्व करता है।

यह मत है कि जन साधारण का भी हमारा प्रत्यय कितना ही विशिष्ट क्यों न हो। यह एकसे अधिक रंगों का बोध कराता है। ह्यूम ने प्रत्ययों को प्रत्यक्षों की नकल माना है किंतु वे प्रत्यक्ष और प्रत्यय के बीच लिपि और प्रतिलिपि का संबंध नहीं देख

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

पाते हैं। इनके अनुसार प्रत्यक्ष सजीव और सतेज है और प्रत्यय निस्तेज तथा क्षीण है। पर स्वयं ह्युम ने बताया है कि ज्वर, पागलपन तथा स्मृति में प्रत्यक्ष की अपेक्षा प्रत्यय ही अधिक सजीव और सचेत दिखते हैं। फिर प्रत्ययों को हम प्रत्यक्षों की प्रतिलिपियाँ केवल स्मृति ही के आधार पर दिखा सकते हैं परंतु क्या स्मृति के आधार पर हम प्रत्यक्ष का साक्षात्कार कर सकते हैं? स्मृति के द्वारा प्रत्यय ही मिल सकता है प्रत्यक्ष नहीं। ऐसी अवस्था में हम कैसे कह सकते हैं कि प्रत्यय प्रत्यक्ष की नकल है अतः हमें मानना पड़ता है कि प्रत्ययों में मन की रचना की जाती है और ये कहना कि केवल क्षीण तथा पूर्व प्रत्यक्षों की ही ध्वनि मात्र है ठीक नहीं जँचता ह्युम के अनुसार प्रत्यक्ष सरल तथा स्वाधीन है। ऐसी अवस्था में प्रत्यक्षों तथा इसकी क्षीण प्रतिलिपि प्रत्ययों के बीच कोई आंतरिक संबंध नहीं हो सकता है। ह्युम ने प्रत्यक्ष तथा प्रत्यय के बीच नकलपन या प्रतिलिपित्व का संबंध माना है। पर क्या यह संबंध आंतरिक है या बाहरी। ह्युम इनके संबंध को आंतरिक मानते हैं। परंतु हम यह कैसे जाने कि इनके बीच का संबंध आंतरिक है? प्रत्यक्ष से ही यह संबंध स्थापित नहीं हो सकता, क्योंकि भेद तथा सादृश्य

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS
Notes!

स्वतंत्र किसी प्रत्ययों को जाने नहीं जा सकते हैं। प्रत्यक्ष से हमें केवल रंग, ताप या गात्र सुगंध आदि का ही ज्ञान हो सकता है न कि इनके बीच भेद तथा सादृश्य का। इस प्रकार के ज्ञान को हम बौद्धिक कहते हैं जिसे मन की क्रिया कहना चाहिए। इस प्रकार का ज्ञान संवेदनाओं से संबंध अवश्य रखता है पर इसे संवेदना तथा प्रत्यक्ष नहीं कहा जा सकता है।

पुनः ह्यूम का कहना है कि हम प्रत्यक्षों को अलग-अलग करके जानते हैं और वे एक-दूसरे से पृथक रहते हैं। यदि उनके बीच संबंध स्थापित कर हम ज्ञान की रचना करते हैं तो यह संबंध स्थापित कर हम ज्ञान की रचना करते हैं तो यह संबंध बाहरी तथा आकस्मिक सहचर पर निर्भर करता है। सहचर के दो नियमों को ह्यूम मानते हैं। सामीप्य और सादृश्य के नियम। सामीप्य नियम के अनुसार यदि कोई या दो से अधिक प्रत्यक्ष एक साथ या एक के बाद दूसरा आये तो इस प्रकार की परिस्थिति के बार-बार दुहराये जाने पर उनमें ऐसा संबंध हो जाता है कि एक हमारे सामने उपस्थित हो तो दूसरा भी उपस्थित हो जाता है। जैसे- सूर्य और ताप बार-बार एक साथ पाया जाता है और उनके बीच हम सहचर का संबंध देखते हैं। पर इससे तो स्पष्ट हो जाता है कि सूर्य

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes! GRB BOOKS

और ताप अलग - अलग नहीं पर एक साथ अनुभूत न हों तब तक उनके बीच सहचर नहीं हो सकता है और ऐसे मान लेने से ह्यूम के प्रत्यक्षों की पृथकता का सिद्धान्त टूट जाता है। ह्यूम ने सादृश्य - नियम पर अधिक ध्यान नहीं दिया है यदि वे ध्यान देते तो उन्हें स्पष्ट हो जाता कि दो सदृश प्रत्ययों के बीच जरूरी नहीं है कि वे साथ अनुभूत हों और ऐसी दशा में यदि बुद्धि ऐसा और गोली में संबंध हो तो इसे आंतरिक संबंध कहा जायेगा। अतः ह्यूम के प्रत्यक्षों के संबंध में पृथकता का सिद्धान्त युक्ति-संगत नहीं है। पर हमें देखना है कि अब ह्यूम प्रत्यक्षों को पृथक पृथक मानते हैं तो वे इनके बीच किस प्रकार का संबंध स्थापित कर ज्ञान की व्याख्या करते हैं।

बिना प्रत्ययों और प्रत्यक्षों को संबंध किए हुए ज्ञान संभव नहीं है और इसलिए ह्यूम ने इनके बीच के संबंध की व्याख्या की है। इन्होंने समान रीति से दो प्रत्यक्षों के बीच संबंध को दो वर्गों में बाँट लिया है। पहले वर्ग में वे सब संबंध आते हैं जिनका संबंध यथार्थ वस्तुओं से है। आधारित संबंध प्रत्ययों के बीच ज्यामिति बीजगणित और अंकगणित में पाये जाते हैं। ये संबंध सहज प्रत्यक्ष

सुगम पास-बुक AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

(intuition) तथा प्रदर्शनात्मक (demonstration) प्रविधियों के द्वारा स्थापित किये जाते हैं। ह्यूम के अनुसार ज्यामिति से हमारे निष्कर्ष पूर्णतया असंदिग्ध नहीं हो पाते हैं। केवल बीजगणित तथा अंकगणित में ही निष्कर्ष असंदिग्ध तथा अनिवार्य देखने में आते हैं।

इनमें असंदिग्ध ज्ञान इसलिए पाया जाता है कि इनमें अतिस्पष्ट प्रत्यय काम में लाये जाते हैं। परंतु ह्यूम के अनुसार बिना प्रत्यक्ष के प्रत्यय संभव नहीं है तो गणित शास्त्र के परिस्पष्ट और एकदम सही सही प्रत्यय कहाँ से आये? यहाँ ह्यूम कोई जवाब नहीं दे पाते हैं, परंतु वे स्पष्ट रूप से कहते हैं कि प्रत्ययों के बीच के संबंध से अनिवार्य तथा असंदिग्ध ज्ञान अवश्य मिलता है, पर उनका संपर्क यथार्थ वस्तुओं से नहीं रहता है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS